हाथी क्यों छम्मक छम्मक नहीं चलता ?

भाषा शिक्षण की कुछ रोचक गतिविधियाँ

इति शर्मा

साक्षरता सर्वेक्षणों के परिणामों का हवाला देते हुए अकसर यही चिन्ता गहराई रहती है कि अमुक कक्षा के बच्चे अमुक कक्षा की पाठ्यपुस्तक का पाठ नहीं पढ़ पाते या सही-सही अपना नाम अथवा एक पंक्ति भी नहीं लिख पाते। इस समस्या की जड़ें साक्षरता सर्वेक्षणों के तरीक़ों और उनके नतीजों के विश्लेषण में जितनी हैं उतनी ही कक्षा-कक्ष प्रक्रियाओं में भी हैं। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के लिए जिस दृष्टिकोण, उदारता और योजना की ज़रूरत है उसपर यह आलेख प्रत्यक्ष अनुभवों के हवाले से बात करता है। प्रस्तुत आलेख में लेखिका ने भाषा शिक्षण के लिए गतिविधियों की ज़रूरत और उनके असर पर एक व्यावहारिक नज़रिये से विस्तृत चर्चा की है। सं.

शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले पाठकों के लिए अपने आसपास कक्षा एक और दो के बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने के नाम पर अक्षर, ध्वनि, अक्षर की बनावट, वर्णमाला को क्रम से बोल पाना और किसी अक्षर से शुरू होते एक-एक शब्द को अच्छी तरह से रटते देखने का अनुभव शायद नया नहीं होगा। मेरे अनुभव में शिक्षकों के साथ कार्यशाला, स्कूल अवलोकन और बच्चों के साथ सीखने-सिखाने के कार्य शामिल हैं, जिनसे मेरी यह समझ बनी कि ज़्यादातर बच्चों के घरों में पर्याप्त भाषाई अनावरण नहीं होता है।

भाषाई अनावरण से हम यह समझ सकते हैं कि बच्चों का किताबों से पहले से जुड़ाव नहीं होता है और अन्य लिखित सामग्री जैसे– अख़बार, पत्रिकाएँ, साइन बोर्ड, विज्ञापन आदि से जुड़ाव भी बहुत कम होता है जो कि उनके सीखने के लिए काफ़ी नहीं होता है। ऐसी परिस्थिति से जब बच्चे स्कूल में प्रवेश करते हैं तो उन्हें वहाँ भी वैसी ही परिस्थितियाँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए, जिस लक्षित भाषा को उन्हें सीखना है उस भाषा से सम्बन्धित लिखित सामग्रियाँ कक्षा में होनी चाहिए जिनसे वे आसानी से सीख सकें। लिखित सामग्रियाँ भी ऐसी होनी चाहिए जो कि उनके परिवेश से जुड़ी हुई हों। इसके अलावा अगर कक्षा में चित्र-चार्ट हो तो उसके आधार पर शिक्षक को बच्चों से बातचीत करने के अवसर मिलते हैं और यह शिक्षक के लिए बच्चों के पूर्व ज्ञान का अनुमान लगाने में भी मददगार होता है। अगर कक्षा में उपर्युक्त सामग्रियों का अभाव हो तब बच्चों के सीख पाने में कठिनाई हो सकती है।

अपने कक्षा अवलोकन और कक्षा में अभ्यास से मैंने यह पाया कि बच्चों को भाषा कभी भी एकाकी तौर-तरीक़े से नहीं सिखाई जा सकती। बग़ैर सन्दर्भ के भाषा सीखना बहुत ही कठिन है और सन्दर्भ इस प्रकार के होने चाहिए जो बच्चों के आसपास की दुनिया की चीज़ों वाले हों ताकि बच्चे ख़ुद को उससे जुड़ा हुआ महसूस कर सकें।

एनसीएफ़ 2005 भी इस बात का अनुगमन करता है कि बच्चा अपनी मातृभाषा पूरे सन्दर्भ में सीखता है और छः साल का होने तक बच्चा अपने रोज़ के व्यवहार में उसका पूर्ण उपयोग करने में भी सक्षम हो जाता है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या

की रूपरेखा 2005, पृष्ठ क्रमांक 61)। इस वजह से यह आवश्यक है कि भाषा शिक्षण के लिए समृद्ध अर्थपूर्ण सामग्रियाँ होनी चाहिए और ऐसा माहौल होना चाहिए जिसमें बच्चे की भाषा (मातृभाषा) का उपयोग हो।

अपने कक्षा अभ्यासों में भी मैंने यह महसूस किया। बच्चों के साथ चित्र-कहानी गतिविधि पर काम करते वक़्त पहले तो बच्चों से चित्र पर ख़ूब बातचीत की साथ-साथ उन्हें ज़्यादा-से-ज़्यादा बोलने का और अपनी बात को कहने का मौक़ा दिया। बातचीत के दौरान बच्चे हिन्दी में रुक-रुक कर कह रहे थे, पर जब उन्हें अपनी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी में बोलने का अवसर दिया गया तो वह अपने मन की बात को धारा प्रवाह तरीक़े से साझा कर पा रहे थे। जो शिक्षक बच्चों की भाषा की महत्ता को नहीं समझते, वह इस प्रक्रिया में बच्चे के पहले रुक-रुक कर हिन्दी भाषा के प्रयोग करने के आधार पर यह तय कर लेते हैं कि बच्चा अपने मन की बात कहने या अभिव्यक्ति कर पाने में अभी सक्षम नहीं हुआ है और वह बच्चे को उसी वक़्त रोक देते हैं और बच्चे को अपना निर्णय तुरन्त सुना देते हैं कि वह सही तरीक़े से अपनी बात कह नहीं पाता या उसे बोलना नहीं आता है।

> जो शिक्षक बच्चों की भाषा की महत्ता को नहीं समझते, वह इस प्रक्रिया में बच्चे के पहले रुक–रुक कर हिन्दी भाषा के प्रयोग करने के आधार पर यह तय कर लेते हैं कि बच्चा अपने मन की बात कहने या अभिव्यक्ति कर पाने में अभी सक्षम नहीं हुआ है और वह बच्चे को उसी वक़्त रोक देते हैं और बच्चे को अपना निर्णय तुरन्त सुना देते हैं कि वह सही तरीक़े से अपनी बात कह नहीं पाता।

ऐसा करके शिक्षक बच्चे की भाषा का तो तिरस्कार करते ही हैं साथ ही उसे सीखने से भी रोक देते हैं। बच्चे के मन में यह बात घर कर जाती है कि वह लक्षित भाषा में / स्कूल की भाषा में अगर धारा प्रवाह तरीक़े से नहीं कह पाता तो इसका मतलब यह हुआ कि वह अपनी बात अच्छे-से नहीं कह सकता है, तिरस्कार के भय से वह प्रयास भी नहीं करता और धीरे-धीरे उसकी रुचि ही समाप्त हो जाती है।

पहली बात यह कि शिक्षकों को बच्चों की भाषा को महत्त्वपूर्ण समझना चाहिए क्योंकि यही वह भाषा है जिससे उन्होंने अपने आसपास की दुनिया को समझा है और जाना-पहचाना है और यदि शिक्षक बच्चों की भाषा को नकारते हैं तो वह उनके समझ के आधार को भी नकारते हैं जो उन्हें भाषा सीखने में कठिनाई महसूस करा देता है।

दूसरी बात यह कि समझकर पढ़ पाने में अन्दाज़ा लगाकर पढ़ पाने की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जो कुशल पाठक होते हैं वह मात्राओं की ग़लतियों को अकसर नज़रअन्दाज़ करके ही पढ़ते हैं। अगर आप ख़ुद पर ग़ौर करें तो यह पाएँगे कि आप स्वयं भी पढ़ते हुए कई बार अक्षरों व मात्राओं की बहुत छोटी ग़लतियों को नज़रअन्दाज़ कर जाएँगे। जब हम अक्षरों और मात्राओं पर ध्यान लगाकर पढ़ते हैं तो हमें लिखे हुए में ये सब ग़लतियाँ पकड़ में आने लगती हैं।

उदाहरण : "पुरा देश इस वक़्त अपना टैक्स बचाने में जूठा है"

उपर्युक्त वाक्य को पढ़ते हुए कुशल पाठक यह समझ जाएँगे कि वाक्य का अर्थ क्या है, और हिज्जे करके पढ़ने वाले पाठक को इस वाक्य के अर्थ को समझने में कठिनाई महसूस हो सकती है।

इसका मतलब यही हुआ कि धारा प्रवाह पढ़ने में दृश्य-प्रतीकों के उच्चारण से ज़्यादा उस पूरे सन्दर्भ में बन रहे अर्थ की भूमिका होती है। अतः आवश्यक हो जाता है कि भाषा शिक्षण के कालांश में बच्चों के साथ किन्हीं

ख़ास शब्दों-अक्षरों के पठन-लेखन के साथ-साथ ऐसी गतिविधियाँ भी हों जिनसे बच्चों का भाषा के लिखित व मौखिक स्वरूप के विविध रूपों से आमना-सामना हो। उन्हें अन्दाज़ा लगाकर पढ़ पाने के ज़्यादा-से-ज़्यादा अर्थपूर्ण मौक़े मिलें।[1]

तो इस समझ के आधार पर बच्चों के साथ भाषा सीखने-सिखाने को लेकर की जाने वाली कुछ गतिविधियों को आगे बताया जा रहा है, पर उससे पहले आइए समझें कि गतिविधियों से हम क्या समझते हैं और गतिविधियों के लिए कक्षा में कैसा वातावरण होना चाहिए।

गतिविधियों से अभिप्राय :

ऐसे क्रियाकलाप जो बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से सीधा सम्बन्ध रखते हैं और उनके सीखने की प्रक्रिया को सरल, सुगम, सहज, रोचक एवं मनोरंजक बनाते हैं। ये भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में बच्चों के भाषाई कौशलों का भी विकास करते हैं, जैसे–अनुमान लगाकर बोलना, तुलना करना, वस्तुओं के बीच सम्बन्ध स्थापित करना, विश्लेषण करना, सोचना, कल्पना करना, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि।

गतिविधियों के लिए वातावरण :

कक्षा में गतिविधि कराने के पूर्व बच्चों से बातचीत तो करना ही चाहिए ताकि गतिविधि की प्रक्रिया को समझ जाने के बाद वे उस गतिविधि में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा सकें। इसके साथ-ही-साथ शिक्षक को भी अपनी कक्षा के बच्चों की विविध रुचियाँ, कार्य करने की गति, गतिविधि का क्रम और उसके लिए उचित मात्रा में ज़रूरी सामग्री की योजना पहले से ही ऐसी बना लेनी चाहिए जिसमें सीखने के सभी विकल्पों का स्थान हो और कक्षा में सभी बच्चों को गतिविधि में भाग लेने और अभिव्यक्ति के समान अवसर मिलें।

उदाहरण :

- मैंने कक्षा एक और दो के बच्चों के साथ 'रोल प्ले' की गतिविधि कराई। इसका उद्‌देश्य था कि बच्चे कहानी के पात्रों से अपने-आप को जोड़ पाएँ, नाटक का अभिनय करते हुए बातचीत करें और ज़रूरत पड़ने पर कहानी में अपनी इच्छानुसार परिवर्तन करें और कहानी का आनन्द उठा पाएँ।
- रोल प्ले से पूर्व बच्चों को मैंने कहानी सुनाई और कहानी का दृश्यों में बँटवारा किया और बच्चों को अपने पात्र चुनने की और अपनी भाषा में संवाद करने की स्वतंत्रता दी। पात्र का आपस में निर्धारण करते समय कुछ बच्चे कुछ भी बोलने और करने के इच्छुक नहीं थे तो मैंने उन्हें पेड़ बनने अथवा पत्थर बनने का विकल्प दिया जो अपनी जगह अपनी मर्ज़ी से बदल सकता है। रोल के दौरान वह बच्चे जो



चित्र : हीरा धुर्वे

पेड़ और पत्थर बने थे, वह भी आपस में हँसते हुए बात कर रहे थे कि "अब मैं पत्थर बनूँगी। जब शेर आएगा टकरा के गिर जाएगा"।

- इस गतिविधि में बच्चों ने अपने मन से पात्र भी चुने। उन्हें कुछ कहने या करने के लिए स्वतंत्रता भी दी गई। अपनी इच्छानुसार उन्होंने कहानी में परिवर्तन भी किया, और भाषा के उद्‌देश्यों की भी पूर्ति हुई।

गतिविधियाँ क्यों, क्या और कैसे ?

गतिविधि क्यों?	कौन-सी गतिविधियाँ और कैसे?	भाषा सीखने में किस प्रकार सहायक?
1. बच्चे भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनन्द ले सकें।	1. कक्षा एक और दो के लिए सबसे पहली गतिविधि है बालगीत या कविताएँ। **कैसे** : गीत या कविता को लय के साथ गाना और शब्दों के साथ उचित क्रिया के इशारे करना। जैसे– 'चुन्नू-मुन्नू थे दो भाई' में दो शब्द के लिए दो उँगलियों को खोलना और बाक़ी सभी उँगलियों को मोड़े रखना।	1. बच्चे लक्षित भाषा में सुने गए बालगीत या कविता को अपने तरीक़े से गाएँगे, उसका आनन्द उठाएँगे, उसपर विचार करेंगे, शब्दों और इशारों से शब्द और वस्तु के बीच सम्बन्ध बनाएँगे और उस भाषा में उन्हें कहने-सुनने के अवसर मिलेंगे।
2. चित्र में क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक सन्दर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझें।	2. इसके बाद दूसरी महत्त्वपूर्ण गतिविधि है चित्र-चार्ट को देखकर अनुमान लगाना और कहानी बनाना। **कैसे** : बच्चे चित्र को देखकर अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करेंगे। अपनी कल्पना से चित्र के आधार पर कोई नई कहानी या कहानी के घटनाक्रम बनाएँगे जिससे कि उनकी कल्पनाशीलता का विकास होगा और वस्तु के साथ वाक्य / शब्दों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर पाएँगे।	2. बच्चों को कहानी के साथ जुड़ने, कल्पना करने, अनुमान लगाने, तुलना करने, शब्दों को चित्र के साथ जोड़ने और कहानी के पात्रों के बारे में अपने अनुभवों को साझा करने का अवसर मिलता है।
3. बच्चों में पढ़ने का कौशल विकसित करने के लिए।	3. तीसरी गतिविधि है कविता में या कहानी में बार-बार दोहराए गए अक्षर व ध्वनि की पहचान और उस अक्षर से जुड़े बच्चों के पूर्व ज्ञान में मौजूद शब्द या दूसरे शब्दों की किताबों में और अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण में खोज। **कैसे** : 'काला कबूतर और काला कौवा दोनों नदी के किनारे कंकड़ चुनने गए' इस वाक्य में 'क' अक्षर की आवृत्ति बार-बार हो रही है। शिक्षक 'क' अक्षर से ही बच्चों को दूसरे शब्द बनाने के लिए कह सकते हैं या ऐसे वाक्य जिसमें 'क' से कोई शब्द आता हो।	3. शब्दों को पढ़ना सीखने के साथ-साथ बच्चे वाक्य की संरचना से भी मौखिक रूप से रूबरू हो पाएँगे। बच्चे अक्षरों और मात्राओं की पहचान कर सकेंगे। मेरे अनुभव से अक्षरों की पहचान के लिए यह सबसे उपयोगी गतिविधि है।

4. छोटे-छोटे शब्दों को पढ़ना और लिखे हुए शब्द को आसपास के परिवेश से जोड़ना और लिखना।	4. विषय / घटना / कहानी / कविता पर सवाल या बातचीत और उसको शब्दों में श्यामपट्ट या चार्ट में लिखना। **कैसे** : 'आज तुमने क्या खाया?' बच्चे के जवाब को पहले से चिपकाए गए कोरे चार्ट में अथवा दीवार में उसके नाम की जगह पर उसके जवाब को लिखना। इसी तरह से विविध त्योहारों पर बातचीत, बच्चे के किसी घटना से जुड़े अनुभव को सुनना और लिखना।	4. बच्चे इससे छोटे-छोटे शब्दों को और वाक्यों को अपने अनुभव से जोड़ पाएँगे और पढ़ने का अभ्यास करेंगे। जैसे– बच्चे आसपास के जानवर को उनके नाम (लिखित शब्द) से जोड़ पाएँगे और उन्हें ऐसे ही अपने आसपास की चीज़ों को जोड़ने का अवसर दिया जा सकता है।
5. सहपठन, समूह में कार्य करना सीखे, लड़की-लड़का में भेद न करे, और अपने सभी साथियों के साथ बैठना और कार्य करना सीखे।	5. जोड़ों में पढ़ने वाली गतिविधि **कैसे** : धीमी गति से सीखने वाले बच्चे को जल्दी सीखने वाले बच्चे के साथ बैठाया जा सकता है। ऐसा करने से जो बच्चा जल्दी सीख जाएगा वह अपने साथी की गतिविधि को समझने में मदद भी करेगा और दोनों का साथ-साथ सीखना होगा।	5. इससे जल्दी सीखने वाले बच्चे जो जल्दी से अपना कार्य कर लेते हैं, वह खाली नहीं बैठेंगे और धीमी गति से सीखने वाले बच्चे को भी मदद मिलेगी जिससे कि वह निर्देशों को और प्रक्रिया को 2 बार सुनेगा तो अच्छे-से समझेगा और उसकी गति में वृद्धि होगी।

उपर्युक्त सारिणी के पहले और तीसरे बिन्दु में सुझाई गई गतिविधि को मिलाकर मैंने कक्षा एक और दो के बच्चों के साथ काम किया है। यह अनुभव मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहती हूँ।

- सबसे पहले मैंने एक चार्ट में 'धम्मक धम्मक आता हाथी' कविता को रंगीन और बड़े अक्षरों में कक्षा में श्यामपट्ट के बाजू से चिपका दिया। चार्ट चिपकाते वक़्त इस बात का विशेष ध्यान रखा कि बच्चे चार्ट को आसानी से छू और देख सकें।
- इसके पश्चात बच्चों के सामने उस कविता को लय में गाकर सुनाया और कविता में आने वाले शब्दों के उचित इशारों का प्रयोग किया। दूसरे दिन भी कविता को गाने के बाद मैंने बच्चों से आग्रह किया कि उनमें से कोई भी बच्चा हम सभी को वह कविता गाकर सुनाए और हम उनके साथ-साथ गाएँगे। बच्चों के कविता गाने के साथ-साथ मैंने एक दिन पहले चिपकाए चार्ट में उन शब्दों पर उँगलियाँ फेरीं जिन शब्दों को बच्चे उच्चारित करते थे।
- इसके बाद बच्चों से आग्रह किया कि उनमें से कोई भी चार्ट से पढ़कर अपने साथियों को कविता सुनाए। उसके बाद मैंने बच्चों से यह प्रश्न किया कि कविता में कौन-सा शब्द बार-बार आ रहा है, बच्चों ने उत्तर दिया, 'हाथी'। बच्चों ने सही कहा था। मैंने उन्हें ऐसे दूसरे शब्द खोजने को कहा जो बार-बार आ रहे हों। उसके जवाब में उन्होंने 'धम्मक धम्मक' कहा। अब मैंने उनसे यह प्रश्न किया कि ऐसा ही क्यूँ लिखा है 'धम्मक धम्मक' हाथी छम्मक छम्मक भी तो चल सकता है न! ये सुनते ही सभी बच्चे हँस पड़े।

- फिर मैंने उनसे पूछा कि छम्मक छम्मक किस चीज़ से आवाज़ आती है? बच्चों ने छत्तीसगढ़ी भाषा में जवाब दिया, 'पेरपट्टी' और लपककर तुरन्त एक बच्चे ने कक्षा की एक छात्रा, जो पायल पहनी थी, उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, 'वह छम्मक छम्मक चलती है।'

- इस बात पर मैंने बच्चों को ध्यान देने को कहा कि क्योंकि कोई पेरपट्टी पहनती या पहनता है तो हम उसके लिए कह सकते हैं कि वह छम्मक छम्मक चलती या चलता है। फिर मैंने उनसे पूछा, 'अच्छा बताओ कि हाथी क्यों धम्मक धम्मक चलता है?' बच्चों के कोई जवाब नहीं आए।

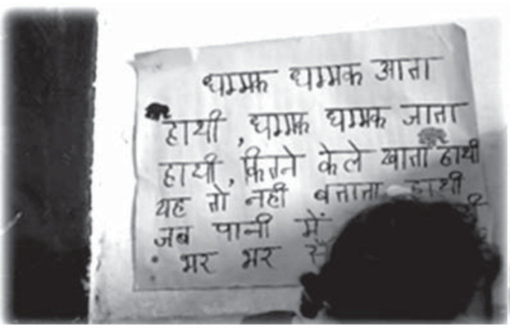
- मैंने कक्षा में रखे एक खाली बस्ते को उठाया और लगभग एक मीटर ऊपर ले जाकर छोड़ दिया तो कोई आवाज़ नहीं आई। फिर मैंने 2-3 भरे बस्ते एक साथ पकड़कर फिर से प्रक्रिया दोहराई और साथ में 'धम्म' शब्द का उच्चारण किया। बच्चे यह समझ गए कि चूँकि हाथी भारी होता है इसलिए धम्मक धम्मक चलता है।

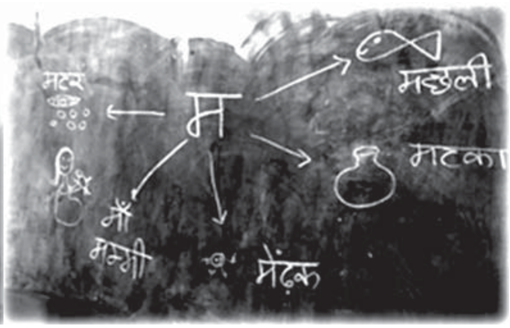
- इसके अगले दिन मैंने बच्चों के साथ फिर से कविता को गाया व फिर श्यामपट्ट पर धम्मक धम्मक और छम्मक छम्मक दोनों लिख दिए और बच्चों से पूछा कि इन दोनों शब्दों में कौन-सा अक्षर सामान्य है। बच्चों ने 'क' और 'म' अक्षरों की तरफ़ इशारा किया क्योंकि बच्चों ने अभी तक उस अक्षर को सिर्फ़ देखा था लेकिन वह उनकी ध्वनियों को चिह्न से जोड़ नहीं पाए थे।

- मैंने बच्चों से पूछा कि क्या वह कोई और शब्द बता सकते हैं जो 'म' से शुरू होता हो? बच्चे इसपर चुप थे। फिर मैंने यह सोचा कि ज़्यादातर बच्चों से जुड़ता हुआ एक शब्द ऐसा है जो 'म' से शुरू होता है, और वह शब्द है 'माँ'। मैंने श्यामपट्ट पर एक चित्र बनाया जिसमें एक स्त्री ने एक बच्चे को गोद में लिया है। बच्चों से मैंने जब पूछा कि क्या वह बता सकते हैं यह चित्र किसका है, तो उन्होंने कहा, 'लड़की'। मैंने फिर दूसरा सवाल पूछा कि वह हाथ में क्या पकड़ी है? उसपर बच्चों ने कहा, 'लड़की कीड़ा पकड़ी है'। फिर मुझे यह अहसास हुआ कि मैंने चित्र ठीक से नहीं बनाया था। उस चित्र में लड़की के हाथ में जो बच्चा था उसके हाथ और पैर मैंने नहीं बनाए थे। मैंने तुरन्त उसके हाथ-पैर बनाए और बच्चों ने तुरन्त जवाब दिया, 'माँ / मम्मी'।

- फिर मैंने बच्चों से कहा कि अब उनमें से कोई एक बच्चा चित्र बनाए और बाक़ी सब बच्चे उसकी पहचान करेंगे। लेकिन यह ध्यान में रहे कि वह शब्द जिसका चित्र वो बनाएँगे वह 'म' से ही हो। जो बच्चे चित्र न बना पाएँ, वह मेरे कान में उस शब्द को कहेंगे और मैं उस चित्र को बनाऊँगी। साथ-ही-साथ उन्हें उस शब्द का अभिनय करने का भी विकल्प दिया गया।

- इस प्रकार कक्षा एक और दो के बच्चे जो हिन्दी के अक्षरों की पहचान बिलकुल भी नहीं कर पाते थे वह 'म' अक्षर की उसकी ध्वनि के साथ पहचान कर पा रहे थे एवं अपने परिवेश से जुड़ते हुए शब्द भी बता पाए।





इसके अलावा भी कुछ अन्य गतिविधियाँ हैं जो सभी कक्षाओं के लिए उपयुक्त हैं जैसे– चित्र-लेखन, बहस, नाटक, चर्चा, भाषण, संगीत (पण्डवानी, भरथरी व अन्य लोक गीत), लोक नृत्य (राऊत नाचा, पंथी नृत्य)। यह गतिविधियाँ बच्चों को खुलकर हिस्सा लेने और अपने-आप को अभिव्यक्त करने का मौक़ा देती हैं। साथ ही ऐसे मौक़े बनाती हैं जिनमें हम बच्चों के आसपास परिवेश, परिवार, संस्कृति-परम्परा को आधार बनाकर कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाओं को जीवन से जोड़ सकते हैं। बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं, जिसकी वकालत एनसीएफ़ भी पुरज़ोर तरीक़े से करता है।

सन्दर्भ :

1. दिलीप चुघ, 'कुछ और गतिविधियों से भाषा प्रशिक्षण', *शैक्षणिक संदर्भ,* अंक–18 (मूल अंक–75).

2. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* 2005, पृष्ठ क्रमांक 61.

3. *'लिखने की शुरुआत एक संवाद',* अध्याय– 2 'बच्चों का चित्र लेखन' पृष्ठ क्रमांक 15 और अध्याय– 3 'कक्षा एक और दो में लेखन — एक दृष्टिकोण' पृष्ठ क्रमांक 24. (NCERT प्रकाशन)।

इति शर्मा पिछले छह साल से शिक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं । आपने रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, छत्तीसगढ़ में तीन साल सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्य किया है। शिक्षा के विषयों पर लिखती रहती हैं। साल 2018 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में हिन्दी तथा अंग्रेज़ी की सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में छत्तीसगढ़ के बलोदाबाज़ार ज़िले में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : itee.sharma@azimpremjifoundation.org